ज्ञान का वर्गीकरण
मानव के जीने के साथ उसका संबंध

प्रस्तुति : डॉ. सुरेन्द्र पाठक, अहमदाबाद

सनातन परंपरा में ज्ञान का वर्गीकरण

चार वेद, ब्राह्मण ग्रंथों, आरण्यकों एवं उपनिषदों - वैदिक साहित्य

उपवेद (धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, शिल्पवेद, आयुर्वेद) अत्यन्त परिवर्ती होने के कारण इन्हें वैदिकोत्तर साहित्य के अन्तर्गत रखा गया है।

वैदिक साहित्य को श्रुति साहित्य के नाम से जाना जाता है।

वेद का नाम	ब्राह्मण ग्रंथ	आरण्यक	उपनिषद	वेदों की ऋचाएँ व मंत्र
ऋग्वेद (ज्ञान)	ऐतरेय कौषीतकी	ऐतरेय कौषीतकी	ऐतरेय कौषीतकी	इसमें कुल 10 मण्डल, 1028 ऋचाएँ व 10580 मंत्र हैं। वेदों के संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन
सामवेद (उपासना) (तीन प्रमुख शाखायें हैं- कौथुम, जैमिनीय व राणायनीय)	ताण्ड्य जैमिनीय	जैमिनीय छांदोग्य	जैमिनीय छांदोग्य	इसमें कुल 1549 ऋचाएँ हैं। सामवेद की तीन प्रमुख शाखायें हैं- कौथुम, जैमिनीय व राणायनीय।
यजुर्वेद (कर्म) (दो अन्य शाखायें कृष्ण यजुर्वेद, शुक्ल यजुर्वेद)	*कृष्ण यजुर्वेद-तैत्तिरीय ब्राह्मण *शुक्ल यजुर्वेद-शतपथ ब्राह्मण	वृहदारण्यक, तैत्तिरीय, शतपथ	वृहदारण्यक उपनिषद, कठोपनिषद, ईशोपनिषद, श्वेताश्वतर, मैत्रायण व महानारायण	यह कर्मकाण्डीय वेद है। इसमें अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का वर्णन है इसमें कुल 1990 मंत्र संकलित हैं। यह गद्य तथा पद्य दोनों में है।
अथर्ववेद (विज्ञान) (दो अन्य शाखायें- शौनक और पिप्पलाद)	गोपथ ब्राह्मण	अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं है।	मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, प्रश्नोपनिषद	इसमें 20 अध्याय, 731 सूक्त तथा 6000 मंत्र है। इसमें ब्रह्म ज्ञान, औषधि प्रयोग, तन्त्र-मन्त्र, भूत-प्रेत व जादू-टोना का वर्णन है।

सनातन परंपरा में ज्ञान का वर्गीकरण

श्रुति

चार वेद **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद**
और उनके तीन उपसमूह
ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों को 'श्रुति' माना गया है।

- आरण्यक में दर्शन,
- ब्राह्मणों में भाष्य और
- उपनिषदों में दर्शनों के विस्तार हैं।

स्मृतियों

'स्मृतियों' को इन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है :

- **वेदांग :** (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, निरुक्त)
- **उपवेद** :
    - आयुर्वेद- ऋग्वेद से ;
    - धनुर्वेद - यजुर्वेद से ;
    - गन्धर्ववेद - सामवेद से, तथा
    - शिल्पवेद - अथर्ववेद से।
- **अपांग दर्शन** : (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदांत)

सनातन परंपरा : स्मृतियों की श्रेणीयां

1. **वेदांग :** (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, निरुक्त)।

2. **सूत्र:** (गृह्य, आश्वलायन, सांख्यायन, गोभिल पारस्कर, बौधायन, भारद्वाज और आपस्तंबादि सूत्र)

3. **स्मृति ग्रंथ :** (18) मनु, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विष्ण, हारीत, उशनस, अंगिरा, यम, कात्यायन, बृहस्पति, पराशर, व्यास, दक्ष, गौतम, वशिष्ठ, नारद और भृगु आदि के रचे हुए अठारह धर्मशास्त्र।

4. **इतिहास ग्रंथ** : रामायण महाभारत आदि।

5. **पुराण :** (18) ब्रह्मपुराण, पद्मपुराण ,विष्णुपुराण, शिवपुराण, श्रीमद्भावतपुराण, नारदपुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, लिंगपुराण, वाराहपुराण, स्कन्धपुराण, वामनपुराण, कूर्मपुराण, मत्सयपुराण, गरुड़पुराण, ब्रह्माण्डपुराण।

6. **नीति व दर्शन शास्त्र :** सब प्रकार के नीति और दर्शन (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और वेदांत)

आस्तिक दर्शन निम्नांकित छह हैं, इसके अतिरिक्त तंत्र, ज्योतिष, गणित, नास्तिक दर्शन चार्वाक, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन

छह आस्तिक दर्शन

न्याय (गौतम)

प्रमाणप्रमेयसंशयप्रयोजनदृष्टान्तसिद्धान्तावयवतर्कनिर्णयवादजल्पवितण्डाहेत्वाभासच्छलजाति निग्रहस्थानानाम्तत्त्वज्ञानान्निःश्रेयसाधिगमः। (न्यायसूत्र) **अर्थ :**
प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त अयवय, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान का तत्वज्ञान निःश्रेयस या परम कल्याण का विधायक है।

वैशेषिक (कणाद)

अथातो धर्मं व्याख्यास्यामः । यतोऽभ्युदयनि: श्रेयससिद्धि: स धर्म:। (वैशेषिक सूत्र)

सांख्य (कपिल) - **अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः।**(सांख्यसूत्र)

योग दर्शन (पतंजलि) - **अथ योगानुशासनम्।** (योगसूत्र)

पूर्व मीमांसा (जैमिनी) - **अथातो धर्म जिज्ञासा** (पूर्वमीमांसा)

उत्तर मीमांसा (बादरायण) - **अथातो ब्रह्म जिज्ञासा।** (वेदान्तसूत्र)

Fragmented approach of knowledge/education content classification

ज्ञान / शिक्षा सामग्री वर्गीकरण का खंडित/विखंडन दृष्टिकोण

(1) ब्लूम का वर्गीकरण

लर्निंग डोमेन (सीखने के तीन प्रकार के क्षेत्र) के लिए

- **संज्ञानात्मक** (मानसिक कौशल (ज्ञान)
- **भावात्मक डोमेन** (भावनाओं/भावनात्मक क्षेत्रों में विकास (मनोवृत्ति)
- **साइकोमोटर डोमेन** (मैनुअल या शारीरिक कौशल (कौशल)

संज्ञानात्मक: मानसिक कौशल (ज्ञान/Knowledge)	याद रखना:	Remembering
	समझना:	Understanding
	अनुप्रयोग	Application
	विश्लेषण	Analysis
	संश्लेषण	**Synthesis**
	मूल्यांकन	Evaluation
	बनाना:	Creating

ब्लूम का वर्गीकरण

भावनात्मक: भावनाओं या भावनात्मक क्षेत्रों में विकास (मनोवृत्ति /Attitude)	प्राप्ति से सम्बन्धित परिघटना	Receiving Phenomena
	परिघटना पर प्रतिक्रिया देना	Responds to Phenomena
	मूल्यांकन	Valuting
	गठन/संगठन	Organization
	मूल्य समावेशित करना (चरित्रगत):	Internalizes Values

साइकोमोटर: मैनुअल या शारीरिक कौशल (कौशल/Skill)	बोध:	Perception (awareness)
	शीघ्रता (सेट):	Set
	मार्गदर्शित प्रतिक्रिया	Guided Response
	क्रियाविधि:	Mechanism (basic proficiency)
	प्रकट रूप वाली जटिल प्रतिक्रिया:	Adaptation
	अनुकूलन	Origination
	व्युत्पत्ति:	

(2) Dewey Decimal classes

The Dewey Decimal Classification (DDC) is structured around ten main classes covering the entire world of knowledge; each main class is further structured into ten hierarchical divisions, each having ten sections of increasing specificity.

000 – Computer science, information & general works
100 – Philosophy & psychology
200 – Religion
300 – Social sciences
400 – Language
500 – Pure Science
600 – Technology
700 – Arts & recreation
800 – Literature
900 – History & geography

(3) Fundamental Content of Education and their objectives

1. Philosophy:

the study of ultimate reality and meaning.

- **Metaphysics**: the study of ultimate reality.
- **Epistemology**: the study of knowledge.
- **Axiology:** the study of values.

Necessary Questions Philosophy asks the questions:

- ✓ What is existing? What is knowing? What is good?

2. Mathematics:

the study of necessary truths about inference, order, quantity, and relation.

3. Natural Science:

the study of the regular behavior of nature.

- **Physics**: the study of matter and energy.
- **Astronomy**: the study of extraplanetary space and its contents.
- **Chemistry**: the study of substances and their properties.
- **Geoscience:** the study of the physical composition and behavior of planets.
- **Biology**: the study of life

Fundamental Content of Education

4. Technology:

the application of science and mathematics.

- Engineering: the application of physical science.
- Biotechnology: the use of biological and bioactive methods and instruments.
- Management: the direction of persons and related processes.
- Industrial Technology.

5. Social Science:

the study of the regular behavior of persons.

- Economics: the study of production, exchange, and consumption of goods by persons.
- Political Science: the study of the government of persons.
- Sociology: the study of human group behavior.
- Psychology: the study of mind.
- Linguistics: the study of language.
- History: the study of humanity's past.
- Futurology: the study of humanity's future.

Basic objectives content of education

Philosophy: Study of

- Ultimate Reality and (पूर्ण/सार्वभौम सत्य/वास्तविकता)
- meaning. (अर्थ और लक्ष्य)

Mathematics: Study of

- Necessary Truths about ()
- inference, order, quantity, and relation.

(निष्कर्ष, व्यवस्था/क्रम, मात्रा और संबंध के बारे में आवश्यक सत्य)

Natural Science: Study of the

- Regular Behavior of Nature.

(प्रकृति का नियमित/निश्चित व्यवहार)

Technology: Study of

- Application of science and mathematics.

(विज्ञान और गणित का प्रयोग)

Social Science: Study of the

- Regular Behavior of Persons.

(मानव का नियमित/निश्चित व्यवहार)

- What we achieved so far from study of these content of education?
- It is not directly connected to human life
- We should search a integrated knowledge system which is useful in human living.

- शिक्षा की इन सामग्रियों का अध्ययन कर हमने क्या हासिल किया?
- यह सीधे मानव जीवन से सीधे जुड़ता नहीं है।
- हमें एक एकीकृत ज्ञान प्रणाली की खोज करनी चाहिए जो मानव के जीने में उपयोगी हो।

What we achieved so far
From study of these content of education

Philosophy: the study of ultimate reality and meaning.

जानना था : पूर्ण/सार्वभौम सत्य/वास्तविकता अर्थ और लक्ष्य
मिला क्या : अस्थिरता, अनिश्चिता, लक्षय-दिशा विहीनता, रहस्य
पाना क्या था : भ्रम-भय मुक्ति, रहस्य मुक्ति, सुख-शांति-संतोष

Mathematics: study of necessary truths (inference, order, quantity and relation)

पाना था : निष्कर्ष, व्यवस्था/क्रम, मात्रा और संबंध के बारे में आवश्यक सत्य
मिला क्या : कितना, क्या, क्यों पता चला? क्रम, संबंध पता चला?

Natural Science: the study of the regular behavior of nature.

जानना था : प्रकृति का नियमित/निश्चित व्यवहार/आचरण
प्रश्न है कि क्या पहचान पाये ?
मिला क्या : अस्थिरता, अनिश्चिता, असंतुलन, विकृति

Technology: the application of science and mathematics.

करना था : विज्ञान और गणित का प्रयोग किसलिए ?
किया क्या : प्रदूषण, असंतुलन, धरती बर्बाद, पोषकता – गुणवत्ता का ह्रास

Social Science: the study of the regular behavior of persons.

जानना था : मानव का नियमित/निश्चित व्यवहार/आचरण
प्रश्न है कि क्या पहचान पाये ?
मिला क्या : व्यवहार/आचरण अस्थिरता, अनिश्चिता, शोषण , अपराध, द्वेष

प्रचलित शिक्षा से अपेक्षाएं और अभी तक की दिशा

विषय	शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन के लिए अपेक्षित वस्तु - जनाकांक्षा	प्रचलित शिक्षा से जनित प्रवृतियाँ विषयों की अपराध लिप्तता
विज्ञान	प्राकृतिक नियम, नियंत्रण, संतुलन की स्पष्टता, नैसर्गिकता, निश्चितता, सार्वभौमिकता, व्यवस्था	अनियंत्रण, असंतुलन, प्रदूषण, अस्थिरता-अनिश्चता, द्वंद्व-संघर्ष, लक्ष्य-दिशा विहीनता
मनोविज्ञान	संस्कार, मूल्य निष्ठा, विश्वास, प्रेम, आचरण में निर्द्वंद्वता/ निर्विरोधता, संस्कृति-सभ्यता की स्पष्टता	कामोन्माद, दिखावा, ऐन्द्रिकता, फूहड़ता, शासन, व्यापार, भ्रामक प्रचार में उपयोग
दर्शनशास्त्र	तर्क सम्मतता, मानव के जीने में सहायक और प्रामाणिकता, न्याय, धर्म, सत्य की स्पष्टता	रहस्य, मतभेद, क्रियापक्ष की उपेक्षा, कार्यक्रमों का आभाव, वितंडावाद, अंतर्विरोधी, लक्ष्य-दिशा अस्पष्टता
अर्थशास्त्र	आर्थिक समानता, लाभ-हानि मुक्त विनिमय, समृद्धि और समृद्धि सुलभता, नियमपूर्ण उत्पादन, व्यवस्था	लाभोन्माद, शोषण, अपराध, आर्थिक विषमता, प्रदूषण, प्राकृतिक असंतुलन, व्यक्तिवाद, भोगोन्माद
समाजशास्त्र	समाजिकता व मानवीय आचरण, अखंड समाज की स्पष्टता, सामाजिक नियम, विधि-विधान, संविधान	भोगोन्माद, समुदाय चेतना, भय-प्रलोभन-आस्था के आधार पर संबंध, सम्बन्धों में कर्तव्य-दायित्व विहीनता
राजनीतिशास्त्र	तन, मन, धन की सुरक्षा, सदुपयोग, संरक्षण-संवर्धन विधि-प्रक्रिया, प्रणाली, व्यवस्थात्मक साम्यरसता	भय-प्रलोभन आधारित शासन और दंड नीति, संघर्ष, हिंसा, युद्ध, छल-कपट-दम्य-पाखंड का आचरण
इतिहास	मानव-मानवीयता-सामाजिकता, सफलता का इतिहास और ज्ञान-विवेक-विज्ञान का इतिहास	अमानवीयता, युद्ध, हिंसा, अपराध, दुर्घटना, भोग-विलाशिता आदि के इतिहास से ग्रसित
भूगोल	मानव और मानवीयता के लिए भूगोल	युद्ध और व्यापार के लिए भूगोल का
साहित्य	यथार्थता-वास्तविकता-सत्यता को, मूल्य चेतना, अलंकारिक तरीके से मानवीय आचरण की प्रस्तुति	एन्द्रियकता, श्रृंगारिकता, कामुकता, अव्यवहारिक काल्पनिक, समस्या का चित्रण

Content flow in society and System

Education and System are interdependent (Complimentary)

शिक्षा और व्यवस्था अन्योन्याश्रित (पूरक)

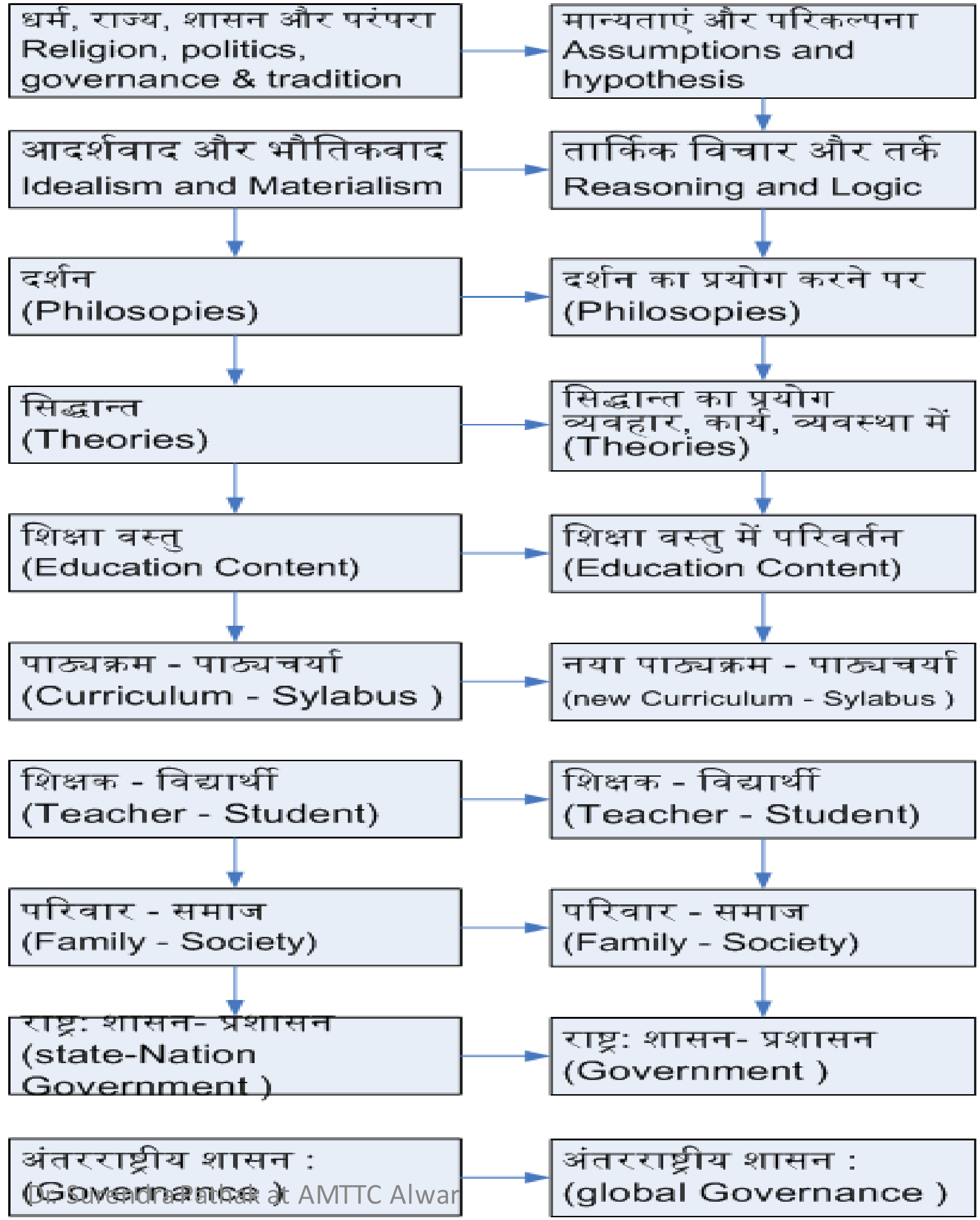

(1.1-CE) Content flow in society and System

ISM
used to form nouns that refer to social, political, or religious beliefs, studies, or ways of behaving

Philosophies
the use of reason in understanding such things as the nature of the real world and existence, the use and limits of knowledge, and the principles of moral judgment:

Theories
a formal statement of the rules on which a subject of study is based or of ideas that are suggested to explain a fact or event or, more generally, an opinion or explanation:

Content
a defined domain of knowledge and skill in an academic program

Curriculum
is an agreement among communities, educational professionals, and the State on what learners should take on during specific periods of their lives. Furthermore, the curriculum defines "why, what, when, where, how, and with whom to learn

Teacher, Student, society

Structures/System
(Social, Political, Economic)

ISM

Materialism
In the material world, or in any of its spheres, it is through contradiction, conflict, unity and struggle that changes are happening continuously -- and this characterises the material world. Contradiction of matter has two aspects -- internal contradiction and external contradiction. The contradiction and conflict going on within any body or entity is its internal contradiction. The contradiction and conflict between different bodies or entities is called external contradiction. Changes in the material world come about through both internal and external contradictions.

Material Philosophies
Conflict Centric philosophies

Conflict Theories
Some Conflict theories: Confucianism Consensus theory Conservatism Contractualism Cosmopolitanism Culturalism Fascism Feminist political theory Gandhism Individualism Legalism Liberalism Libertarianism Mohism National liberalism Republicanism Social constructionism Social constructivism Social Darwinism Social determinism Socialism Utilitarianism and others

Conflict Centric Content
a defined domain of knowledge and skill in an academic program

Conflict Centric Curriculum
is an agreement among communities, educational professionals, and the State on what learners should take on during specific periods of their lives. Furthermore, the curriculum defines "why, what, when, where, how, and with whom to learn

Teacher, Student, society
(CONFLICT INCREASING)

Structures/System
(CONFLICT INCREASING)
(Social, Political, Economic)

ISM
(CONFLICT INCREASING)

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद पर आधारित शिक्षा वस्तु

- मानवीय शिक्षा वस्तु की अखंडता और सामरस्यता
- ज्ञान, विवेक, विज्ञान का संबंध - अंतरसंबंध
- मानव के जीने से उसका संबंध
- प्रचलित शिक्षा में इसके लिए शिक्षा का मानवीयकरण और गुणात्मक सुधार

मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद पर आधारित शिक्षा वस्तु

मानवीय शिक्षा वस्तु की अखंडता और सामरस्यता

ज्ञान, विवेक, विज्ञान संबंध

ज्ञान = अनुभव + विचार (बौद्धिक क्षेत्र) = **मानव मानसिकता**

विवेक = अनुभव +विचार + व्यवहार (बौद्धिक + सामाजिक क्षेत्र) = **अखंड समाज**

विज्ञान = अनुभव + विचार + व्यवहार + व्यवसाय (बौद्धिक + सामाजिक + प्राकृतिक क्षेत्र)

= **सार्वभौम व्यवस्था**

❖ सर्वमानव चार आयाम और पांच स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अंतरराष्ट्र) में मानव परंपरा में जीता हुआ दिखता है।

❖ मूल रूप से जीने में पांच व्यवस्थात्मक कार्यक्रम हैं जो निम्नानुसार है:-

- **शिक्षा-संस्कार व्यवस्था** (ज्ञान-विवेक-विज्ञान सहज बोध होने की विधि-प्रक्रिया-प्रणाली)
- **उत्पादन-कार्य व्यवस्था** (उपयोगिता, सुंदरता के लिए श्रम नियोजन विधि-प्रक्रिया-प्रणाली)
- **विनिमय-कोष व्यवस्था** (लाभ-हानि मुक्त वस्तु विनिमय विधि-प्रक्रिया-प्रणाली)
- **न्याय-सुरक्षा व्यवस्था** (न्यायपूर्वक वर्तमान में विश्वास करना-परस्परता में विश्वस्थ होने की विधि-प्रक्रिया-प्रणाली)
- **स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था** (जागृति सहज प्रमाण प्रस्तुति की विधि-प्रक्रिया-प्रणाली)

ज्ञान = (बौद्धिक क्षेत्र) = Philosophy +Logic + S Science + N Science (समझना -समझाना)

- **अस्तित्व ज्ञान**
- **जीवन ज्ञान**
- **मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान**

→ **मानव मानसिकता**

विवेक = (+ सामाजिक क्षेत्र) = + Social Sciences (सीखना -सिखाना)

- **चार आयाम** (अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय)
- **पाँच स्थिति** (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अंतरराष्ट्र)
- --

→ **अखंड समाज**

विज्ञान = (+ प्राकृतिक क्षेत्र) = +Natural Sciences + Mathematics + Technology (करना -कराना)

- **चार आयाम** (अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय)
- **पाँच स्थिति** (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अंतरराष्ट्र)
- **पाँच व्यवस्थात्मक कार्यक्रम**
- शिक्षा - संस्कार
- न्याय - सुरक्षा
- उत्पादन - कार्य
- विनिमय - कोष
- स्वास्थ्य – संयम

→ **सार्वभौम व्यवस्था**

ज्ञान = (बौद्धिक क्षेत्र) = Philosophy +Logic + S Science + N Science (समझना -समझाना)

- श्रवण (शास्त्राभ्यास/विचारभ्यास)
- मनन (चिंतनाभ्यास: सहअस्तित्व में प्रतीति और स्थिति-गति दर्शन)
- तर्क सम्मत (कारण-गुण-गणित विधि से समाधान/समझ)
- अनुभव प्रमाण

⇒ **मानव मानसिकता** समाधान

+ विवेक = (+ सामाजिक क्षेत्र) = + Social Sciences (सीखना -सिखाना)

- संबंध की स्वीकृति, मूल्य निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति
- व्यवहार सम्मत : कारण-गुण विधि से न्याय
- व्यवहाराभ्यास (सात संबंध में / कुशलता/मूल्य-चरित्र)
- विधानभ्यास (परिवार सभा से विश्व परिवार सभा)
- न्याय का प्रमाण (परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था)

⇒ **अखंड समाज** अभय

+ विज्ञान = (+ प्राकृतिक क्षेत्र) = +Natural Sciences + Mathematics + Technology (करना -कराना)

- विधानभ्यास (परिवार सभा से विश्व परिवार सभा)
- पाँच व्यवस्थात्मक कार्यक्रम में भागीदारी
  शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम
- (परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था : सभा में निर्णय, परिवार में क्रियान्वयन
- कर्माभ्यास से निपुणता का विकास
- सुलभता (न्याय, शिक्षा, स्वस्थ्य, सुरक्षा, समृद्धि की)
- तन, मन, धन का सदुपयोग/नैतिकता

⇒ **सार्वभौम व्यवस्था** समृद्धि-सहअस्तित्व

ज्ञान = (समझना -समझाना)

- शिक्षा संस्कार (शास्त्राभ्यास/विचारभ्यास)
- निर्णय, निष्कर्ष निकाल पाता, समाधान अभिव्यक्ति-सम्प्रेषण क्षमता
- सही-गलत की पहचान (तर्क सम्मत समीक्षा)
- **प्रबुद्धता** (**ज्ञान, विवेक, विज्ञान समझ** संपन्नता)
- अनुभव प्रमाण (समस्या के की सहज समाधान प्रवृति)

परंपरा

मानव मानसिकता

संस्कृति

+ विवेक = (सीखना -सिखाना)

- व्यवहाराभ्यास (परिवार, परिवार-परिवार संबंध में/कुशलता)
- न्याय सम्मत व्यवहार : **न्याय प्रदायी क्षमता का विकास**
- **संप्रभुता** (**विवेक-समझ** संपन्नता)
- विधानभ्यास (परिवार सभा से विश्व परिवार सभा)
- व्यवहार का प्रमाण (परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था)

अखंड समाज

सभ्यता

+ विज्ञान = (करना -कराना)

- विधानभ्यास (परिवार सभा से विश्व परिवार सभा)
- पाँच व्यवस्थात्मक कार्यक्रम में भागीदारी
  शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम
- (**परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था** : सभा में निर्णय, परिवार में क्रियान्वयन
- **प्रभुसत्ता** (**विज्ञान-समझ** संपन्नता)
- सुलभता (न्याय, शिक्षा, स्वस्थ्य, सुरक्षा, समृद्धि की)
- तन, मन, धन का सदुपयोग/नैतिकता

सार्वभौम व्यवस्था

विधि-व्यवस्था

प्रचलित शिक्षा में इसके लिए
शिक्षा का मानवीयकरण और गुणात्मक सुधार

अनुभव, विचार, व्यवहार और व्यवसाय/व्यवस्था आयाम में शिक्षा वस्तु

- चार आयाम : विचार, व्यवहार, व्यवसाय, अनुभव
- पाँच स्थितियाँ : व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र
- व्यवस्था कार्यक्रम : शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम
- नियमत्रय : बौद्धिक नियम, सामाजिक नियम, प्राकृतिक नियम
- नीतित्रय :
  - ➢ अर्थ नीति (उत्पादन नीति)
  - ➢ राज्य नीति (सुरक्षात्मक नीति),
  - ➢ धर्म नीति (सदुयोगात्मक नीति)
- चतुर्दिक उदय : विधि, संस्कृति, सभ्यता, व्यवस्था
- दस सोपानीय व्यवस्था : परिवार, परिवार-समूह, ग्राम मोहल्ला परिवार, ग्राम/मोहल्ला-समूह परिवार, क्षेत्र परिवार, मंडल परिवार, मडंल-समूह परिवार, मुख्य राज्य परिवार, प्रधान राज्य परिवार, विश्व परिवार राज्य परिवार सभा दस सोपानीय व्यवस्था स्वरूप है। अखंडता ही समाज का प्रधान लक्षण है।
- अनुभूतियाँ : सत्यानुभूति, धर्मानुभूति, न्यायानुभूति और नियम की अनुभूति।
- अनुभव का वैभव : प्रभुता, प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता (सार्वभौम व्यवस्था)

मानव चारों आयामों (अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय), पाँचों स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अन्तर्राष्ट्र) की एकसूत्रता एवं समन्वयता ही अभ्युदय का प्रत्यक्ष रूप है, जिसकी संभावना एवं अवसर है

अनुभव (आत्मा में परम संबंध)	अनुभव- **विचार** (जीवन क्रियाओं में अंतर्संबंध)	अनुभव-विचार- **व्यवहार** (मानव + मानव संबंध)	अनुभव-विचार-व्यवहार- **व्यवसाय** (मानव + प्रकृति संबंध श्रमपूर्वक)
अध्यात्मिक क्षेत्र	**बौद्धिक क्षेत्र**	**सामाजिक क्षेत्र**	**प्राकृतिक क्षेत्र**
सहअस्तित्व में स्वयं का होना	व्यवस्था (सहअस्तित्व) के अर्थ आशा, विचार, इच्छा का नियोजन-अंतर्नियोजन	सामाजिकता-अखण्ड समाज के अर्थ में संबंध निर्वाह और मूल्यों का पहचान व नियोजन	व्यवस्थात्मक कार्यक्रम और सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में मानव श्रम व निपुणता-कुशलता-पांडित्य का प्राकृतिक एश्वर्य पर नियोजन
सहअस्तित्व (नियम-न्याय-धर्म-सत्य) में समस्त क्रियाओं का होना-रहना	सार्वभौमता की पहचान = इच्छा में व्यवस्था चित्रण विचार में समाधान मैत्री आशाओं का उदय	व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, और अन्तर्राष्ट्र में संबंध निर्वाह, व्यस्थात्मक कार्यक्रम, विधि-विधान-संविधान की निरंतरता	मानव परम्परा में सामाजिकता निर्वाह के लिए उत्पादन-विनिमय / प्रकृति में नियम, नियंत्रण और संतुलन को बनाए रखने संरक्षण-संवर्धन
सत्य में अनुभव (ब्रह्मानुभूति), आत्मबोध, स्वबोध, अमरत्व बोध और वास्तविकता-यथार्थता-सत्यता का प्रकटन-प्रकाशन	**धर्मपूर्ण** बौद्धिक नियम (असंग्रह-सरलता-स्नेह-विद्या-अभय) की स्पष्टता, नियंत्रण और व्यवस्थात्मक विचार की अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन	**न्याय** सामाजिक नियम (स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार) की स्पष्टता और नियंत्रण न्यायपूर्ण व्यवहार की अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन	**नियम** प्राकृतिक नियम (ताप संतुलन, दाब संतुलन, खनिज संतुलन, ऋतु संतुलन आदि) की स्पष्टता और नियंत्रण नियमपूर्ण व्यवसाय-व्यवस्था की अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन
विधि	**संस्कृति**	**सभ्यता**	**व्यवस्था**
पूर्ण मूल्य-स्थिति सत्य में निरंतरता ही अनुभवात्मक आयाम की तृप्ति परमानन्द	निपुणता, कुशलता एवं पांडित्यपूर्ण समाधान से वैचारिक आयाम की तृप्ति सुख-समाधान	शिष्टता सहित आचरण से व्यवहारिक आयाम परितृप्ति सुख, शांति, संतोष-समाधान-अभय	आवश्यकता से अधिक उत्पादन (समृद्धि) में उत्पादन-विनिमय आयाम की परितृप्ति सुख, शांति, संतोष, आनंद-समाधान- समृद्धि-अभय-सहअस्तित्व
ब्रह्मानुभूति-प्रेमानुभूति **प्रभुता**	ज्ञान-विज्ञान-विवेक संपन्नता **प्रबुद्धता**	अखण्ड समाज **सम्प्रभुता**	परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था **प्रभुसत्ता**

समझना — जीना

ज्ञान — विवेक — विज्ञान

अनुभव संपन्नता — ज्ञान-विवेक-विज्ञान संपन्नता — विवेक सम्मत विज्ञान

अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन - मध्यस्थ दर्शन: अभ्यास दर्शन - ए. नागराज (2012), जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक

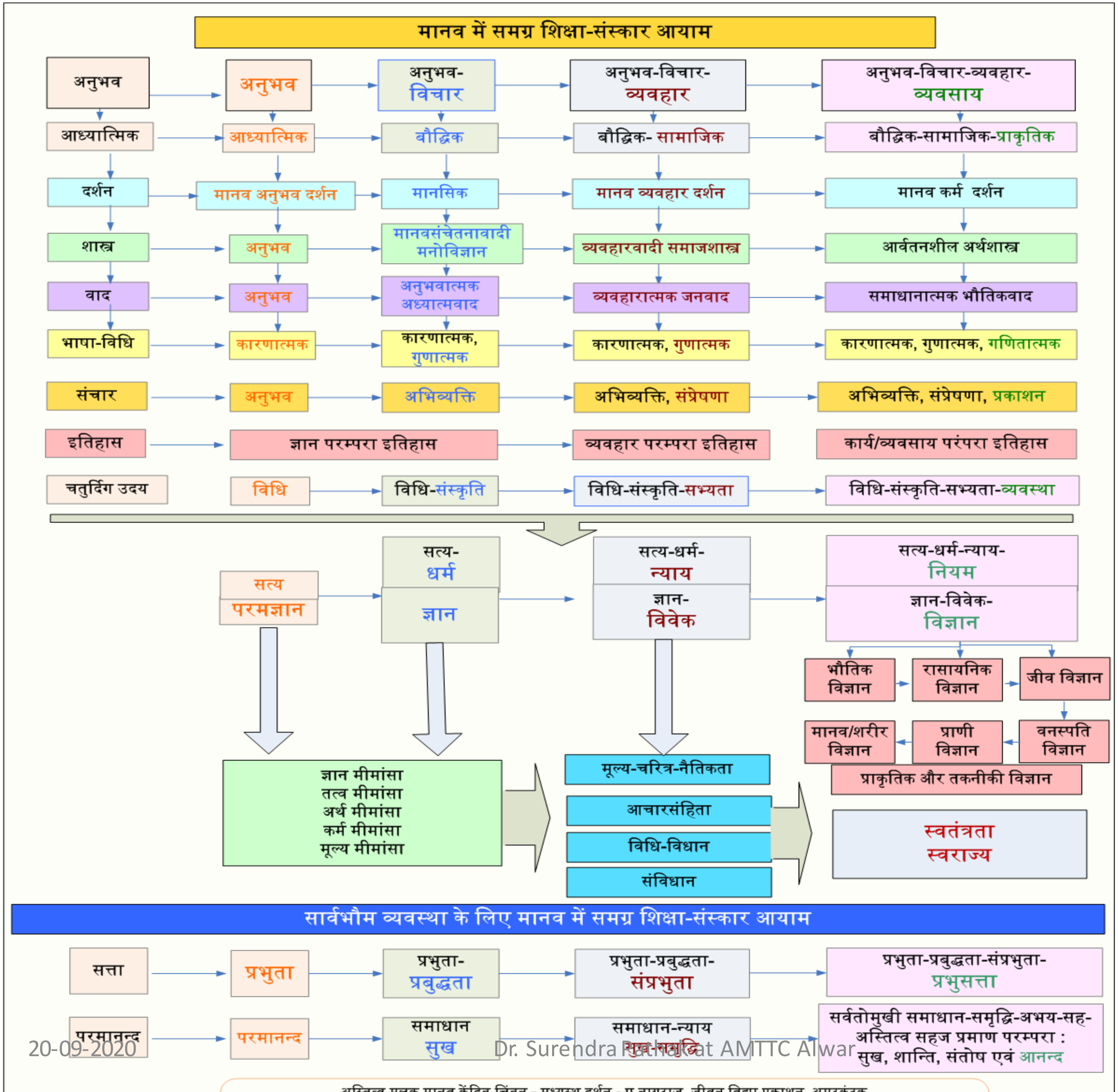

अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय/ व्यवस्था

आयाम में शिक्षा वस्तु का क्रमिक विकास, अंतरसंबंध और विषय-वस्तु वर्गीकरण

मानव में-से-के लिए (ज्ञानावस्था) जागृतिक्रम - जागृति
समझना
जीना
अनुभव (आत्मा में)
अनुभव-विचार (जीवन में)
अनुभव-विचार-व्यवहार (मानव में)
अनुभव-विचार-व्यवहार-व्यवसाय (प्रकृति पर श्रम)
अनुभूति
अध्ययन (स्वयं में-से-के लिए स्पष्ट होना)
अध्ययन, शिक्षा
अध्ययन, शिक्षा, प्रशिक्षण
कारण (आत्मा एवं बुद्धि कारण क्रिया)
सूक्ष्म तथ्य (मन, वृत्ति, चित्त एवं बुद्धि की क्रियाशीलता एवं मूल्यानुभूति सूक्ष्म क्रियाएं)
सूक्ष्म-स्थूल तथ्य (संबंध-मूल्य-मूल्यांकन में जीना) विवेक
स्थूल तथ्य (इन्द्रिय व्यापार एवं उत्पादन स्थूल क्रियाएं) विज्ञान
नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य, सह-अस्तित्व में अनुभव
बौद्धिक नियम (असंग्रह, सरलता, स्नेह, विद्या, अभय) सामाजिकता की समझ, धर्मपूर्ण विचार
सामाजिक नियम (मूल्य, चरित्र, नैतिकता) न्याय, व्यवहारिकता की समझ और (मानव संबंध में जीना)
प्राकृतिक नियम (ताप संतुलन, दाब संतुलन, खनिज संतुलन, ऋतु संतुलन) व्यवसायकिता की समझ और नियम-प्रक्रियापूर्वक उत्पादन (मानव-प्रकृति संबंध में जीना)
सत्यानुभूति
ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता
मानवीय आचरण
निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य
से जागृति
से वैचारिक नियंत्रण
से व्यवहारिक नियंत्रण
से उत्पादन नियंत्रण
अर्थ नीति
राज्य नीति
धर्म नीति
आर्थिक कार्यक्रम
सुरक्षात्मक कार्यक्रम
सदुपयोगात्मक कार्यक्रम
पूर्णानुभूति
मानव मानसिकता
मानवीय आचारसंहिता रुपी संविधान
आत्मा में अनुभव, बुद्धि में आत्मबोध, स्वबोध, अमरत्व बोध
विचार में एकसूत्रता, तारतम्यता, स्पष्टता, निर्विरोधिता और निर्भ्रमता
सामाजिक जीवन में एकसूत्रता, तारतम्यता, अनन्यता और एकात्मकता
उत्पादन के आधारभूत तथ्य शिक्षा, साधन, विनिमय एवं संरक्षण है सामाजिक जीवन में उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग एवं विनिमय अविभाज्य अंग है।
विधि
संस्कृति
सभ्यता
व्यवस्था
अखंडता समाज कार्यक्रम
व्यक्ति
परिवार
समाज
राष्ट्र
अंतरराष्ट्र
शिक्षा - संस्कार
न्याय - सुरक्षा
उत्पादन - कार्य
विनिमय - कोष
स्वास्थ्य - संयम
अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन - मध्यस्थ दर्शन:- अभ्यास दर्शन – ए नागराज (2012), जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक

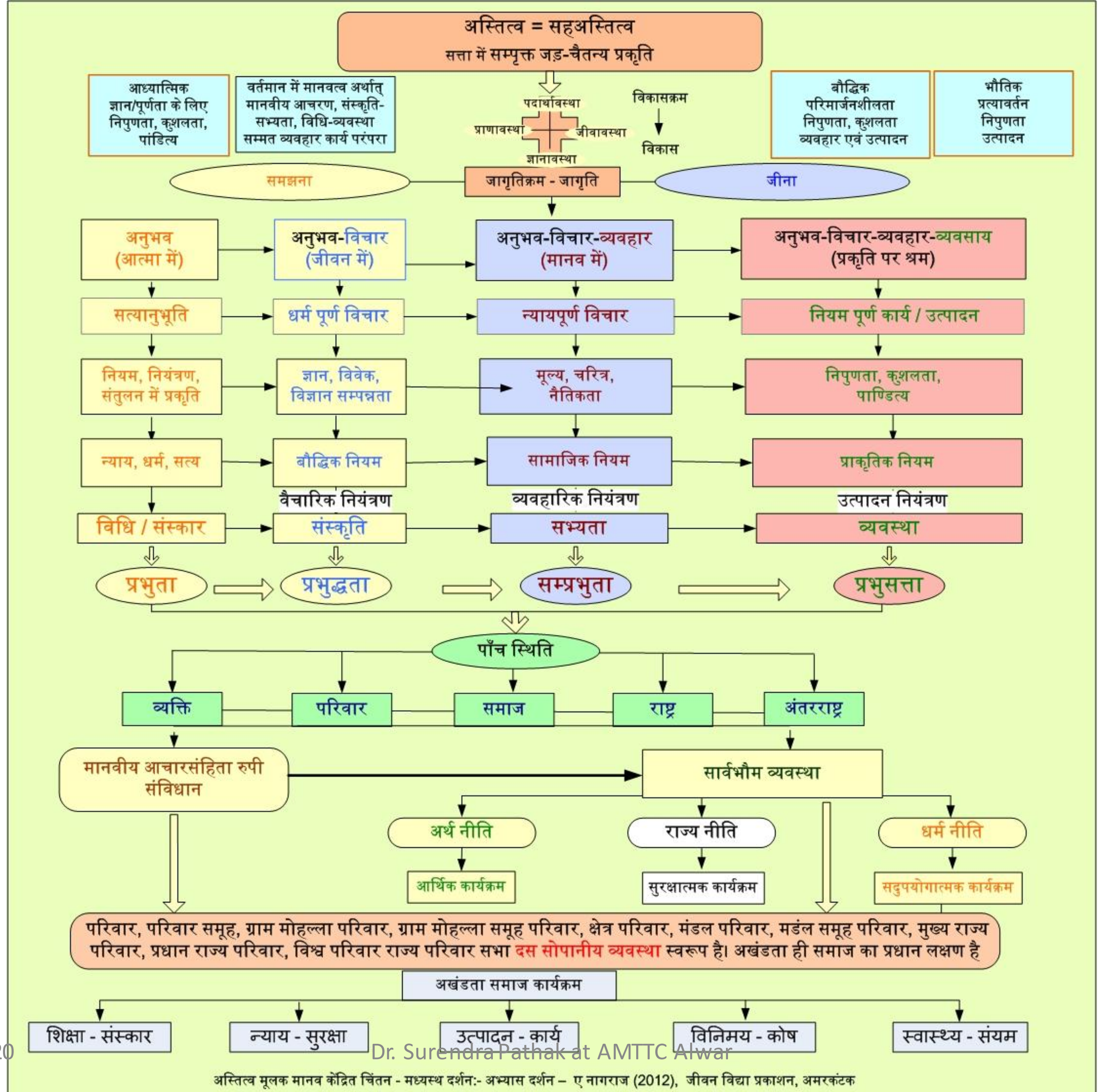
अस्तित्व = सहअस्तित्व
सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति
आध्यात्मिक ज्ञान/पूर्णता के लिए निपुणता, कुशलता, पांडित्य
वर्तमान में मानवत्व अर्थात् मानवीय आचरण, संस्कृति-सभ्यता, विधि-व्यवस्था सम्मत व्यवहार कार्य परंपरा
पदार्थावस्था
प्राणावस्था
जीवावस्था
ज्ञानावस्था
विकासक्रम
विकास
बौद्धिक परिमार्जनशीलता निपुणता, कुशलता व्यवहार एवं उत्पादन
भौतिक प्रत्यावर्तन निपुणता उत्पादन
समझना
जागृतिक्रम - जागृति
जीना
अनुभव (आत्मा में)
अनुभव-विचार (जीवन में)
अनुभव-विचार-व्यवहार (मानव में)
अनुभव-विचार-व्यवहार-व्यवसाय (प्रकृति पर श्रम)
सत्यानुभूति
धर्म पूर्ण विचार
न्यायपूर्ण विचार
नियम पूर्ण कार्य / उत्पादन
नियम, नियंत्रण, संतुलन में प्रकृति
ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता
मूल्य, चरित्र, नैतिकता
निपुणता, कुशलता, पाण्डित्य
न्याय, धर्म, सत्य
बौद्धिक नियम
सामाजिक नियम
प्राकृतिक नियम
वैचारिक नियंत्रण
व्यवहारिक नियंत्रण
उत्पादन नियंत्रण
विधि / संस्कार
संस्कृति
सभ्यता
व्यवस्था
प्रभुता
प्रभुद्धता
सम्प्रभुता
प्रभुसत्ता
पाँच स्थिति
व्यक्ति
परिवार
समाज
राष्ट्र
अंतरराष्ट्र
मानवीय आचारसंहिता रुपी संविधान
सार्वभौम व्यवस्था
अर्थ नीति
राज्य नीति
धर्म नीति
आर्थिक कार्यक्रम
सुरक्षात्मक कार्यक्रम
सदुपयोगात्मक कार्यक्रम
परिवार, परिवार समूह, ग्राम मोहल्ला परिवार, ग्राम मोहल्ला समूह परिवार, क्षेत्र परिवार, मंडल परिवार, मडंल समूह परिवार, मुख्य राज्य परिवार, प्रधान राज्य परिवार, विश्व परिवार राज्य परिवार सभा दस सोपानीय व्यवस्था स्वरूप है। अखंडता ही समाज का प्रधान लक्षण है
अखंडता समाज कार्यक्रम
शिक्षा - संस्कार
न्याय - सुरक्षा
उत्पादन - कार्य
विनिमय - कोष
स्वास्थ्य - संयम
अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन - मध्यस्थ दर्शन:- अभ्यास दर्शन – ए नागराज (2012), जीवन विद्या प्रकाशन, अमरकंटक

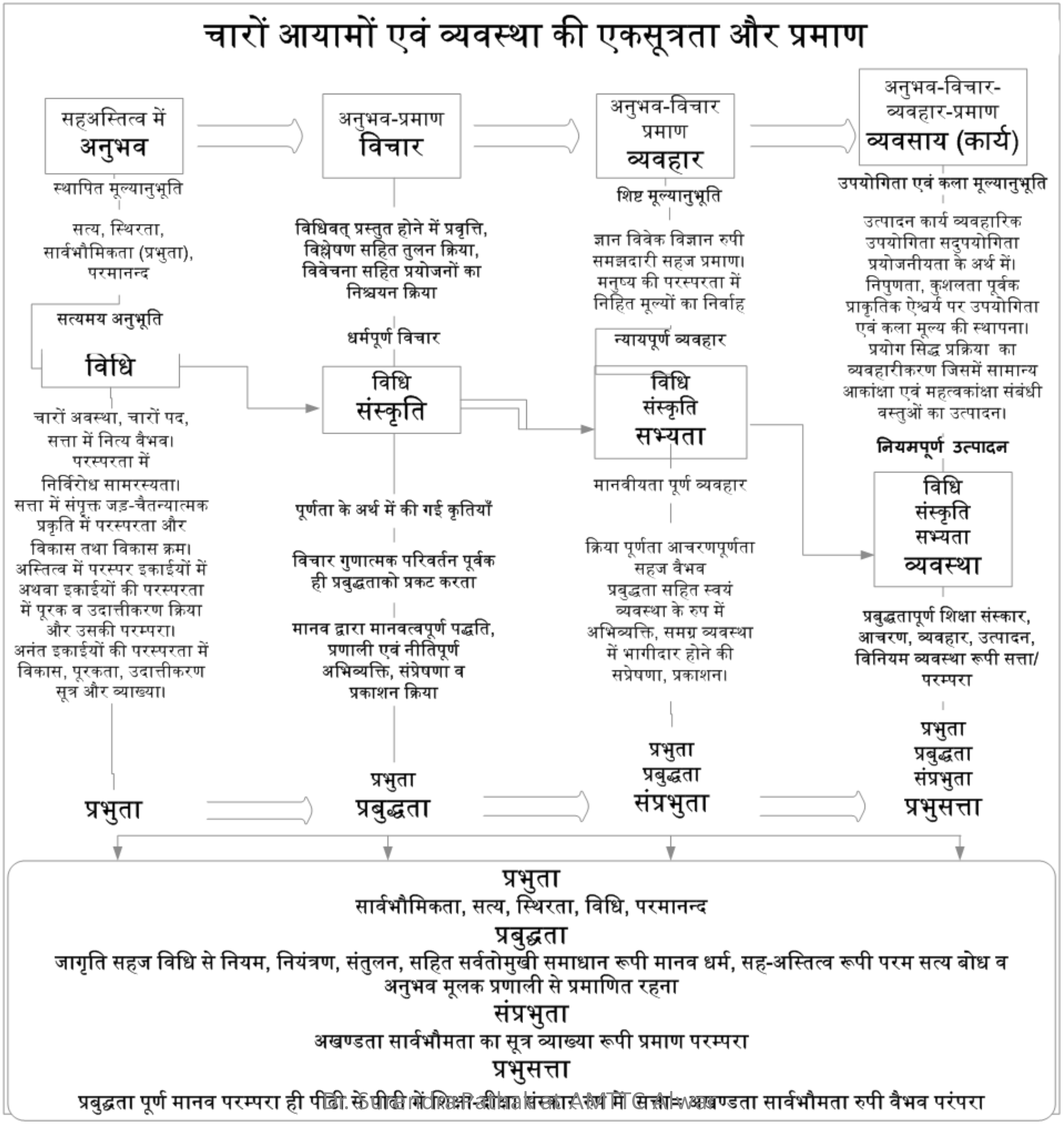
चारों आयामों एवं व्यवस्था की एकसूत्रता और प्रमाण
सहअस्तित्व में अनुभव
अनुभव-प्रमाण विचार
अनुभव-विचार प्रमाण व्यवहार
अनुभव-विचार-व्यवहार-प्रमाण व्यवसाय (कार्य)
स्थापित मूल्यानुभूति
सत्य, स्थिरता, सार्वभौमिकता (प्रभुता), परमानन्द
सत्यमय अनुभूति
विधि
चारों अवस्था, चारों पद, सत्ता में नित्य वैभव। परस्परता में निर्विरोध सामरस्यता। सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्यात्मक प्रकृति में परस्परता और विकास तथा विकास क्रम। अस्तित्व में परस्पर इकाईयों में अथवा इकाईयों की परस्परता में पूरक व उदात्तीकरण क्रिया और उसकी परम्परा। अनंत इकाईयों की परस्परता में विकास, पूरकता, उदात्तीकरण सूत्र और व्याख्या।
विधिवत् प्रस्तुत होने में प्रवृत्ति, विश्लेषण सहित तुलन क्रिया, विवेचना सहित प्रयोजनों का निश्चयन क्रिया
धर्मपूर्ण विचार
विधि संस्कृति
पूर्णता के अर्थ में की गई कृतियाँ
विचार गुणात्मक परिवर्तन पूर्वक ही प्रबुद्धताको प्रकट करता
मानव द्वारा मानवत्वपूर्ण पद्धति, प्रणाली एवं नीतिपूर्ण अभिव्यक्ति, संप्रेषणा व प्रकाशन क्रिया
शिष्ट मूल्यानुभूति
ज्ञान विवेक विज्ञान रुपी समझदारी सहज प्रमाण। मनुष्य की परस्परता में निहित मूल्यों का निर्वाह
न्यायपूर्ण व्यवहार
विधि संस्कृति सभ्यता
मानवीयता पूर्ण व्यवहार
क्रिया पूर्णता आचरणपूर्णता सहज वैभव प्रबुद्धता सहित स्वयं व्यवस्था के रुप में अभिव्यक्ति, समग्र व्यवस्था में भागीदार होने की सप्रेषणा, प्रकाशन।
उपयोगिता एवं कला मूल्यानुभूति
उत्पादन कार्य व्यवहारिक उपयोगिता सदुपयोगिता प्रयोजनीयता के अर्थ में। निपुणता, कुशलता पूर्वक प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता एवं कला मूल्य की स्थापना। प्रयोग सिद्ध प्रक्रिया का व्यवहारीकरण जिसमें सामान्य आकांक्षा एवं महत्वकांक्षा संबंधी वस्तुओं का उत्पादन।
नियमपूर्ण उत्पादन
विधि संस्कृति सभ्यता व्यवस्था
प्रबुद्धतापूर्ण शिक्षा संस्कार, आचरण, व्यवहार, उत्पादन, विनियम व्यवस्था रूपी सत्ता/ परम्परा
प्रभुता
प्रभुता प्रबुद्धता
प्रभुता प्रबुद्धता संप्रभुता
प्रभुता प्रबुद्धता संप्रभुता प्रभुसत्ता
प्रभुता
सार्वभौमिकता, सत्य, स्थिरता, विधि, परमानन्द
प्रबुद्धता
जागृति सहज विधि से नियम, नियंत्रण, संतुलन, सहित सर्वतोमुखी समाधान रूपी मानव धर्म, सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य बोध व अनुभव मूलक प्रणाली से प्रमाणित रहना
संप्रभुता
अखण्डता सार्वभौमता का सूत्र व्याख्या रूपी प्रमाण परम्परा
प्रभुसत्ता
प्रबुद्धता पूर्ण मानव परम्परा ही पीढ़ी से पीढ़ी में शिक्षा-दीक्षा संस्कार रूप में सत्ता = अखण्डता सार्वभौमता रुपी वैभव परंपरा

मानव में चार आयाम और
पांच स्थितियां में
शिक्षा वस्तु का क्रमिक विकास
और जीने के आयाम से अंतरसंबंध

इनके के अंतर्संबंध को समझने के लिए
यह आवश्यक है कि
हम निम्नांकित अंतर्संबंध को समझे

- **अनुभव-विचार के आयाम** और शिक्षा वस्तु अंतर्संबंध **(ज्ञान-समझ)**
- **व्यवहार आयाम** और शिक्षा वस्तु अंतर्संबंध **(समझ -विवेक)**
- **व्यवसाय-व्यवस्था आयाम** और शिक्षा वस्तु अंतर्संबंध **(समझ -विज्ञान)**

(I)

मानव में अनुभव-विचार (ज्ञान-समझ) के आयाम और अंतर्संबंध

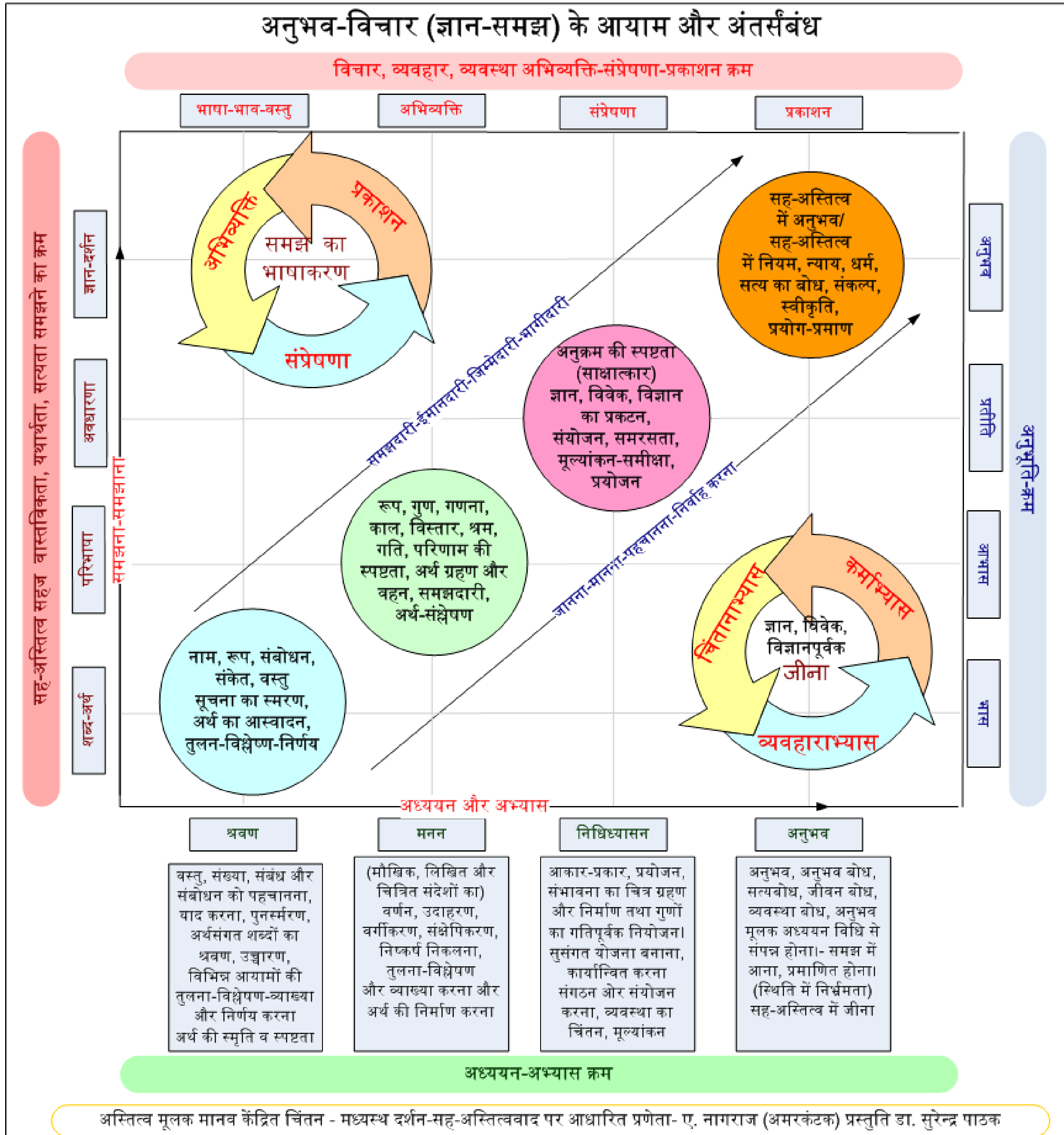

(II)
मानव के अनुभव-विचार व्यवहार आयाम (समझ -विवेक) और अंतर्संबंध

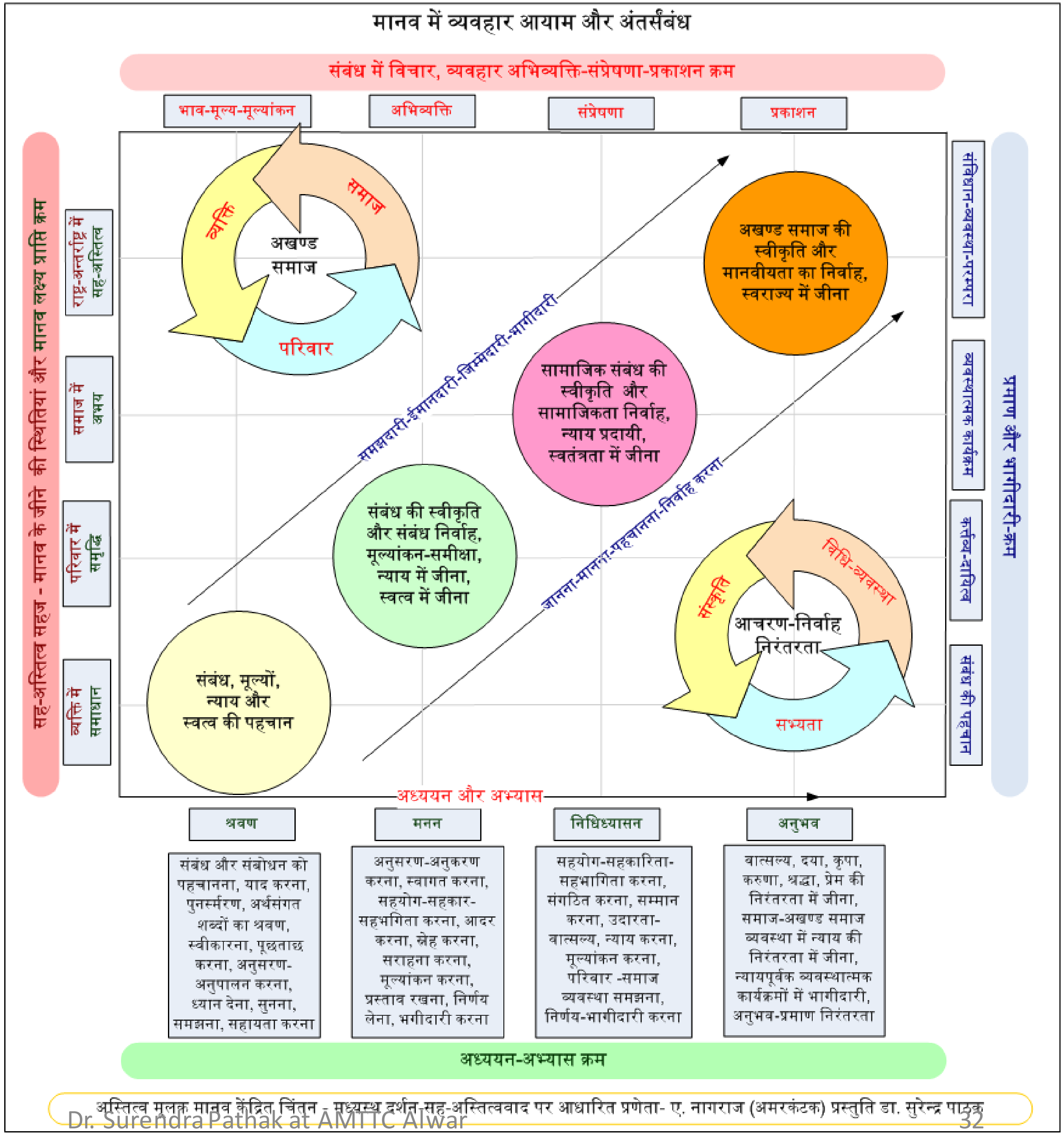

(III) मानव में अनुभव, विचार व्यवहार, व्यवसाय/ व्यवस्था (समझ-विज्ञान) के आयाम और अंतर्संबंध

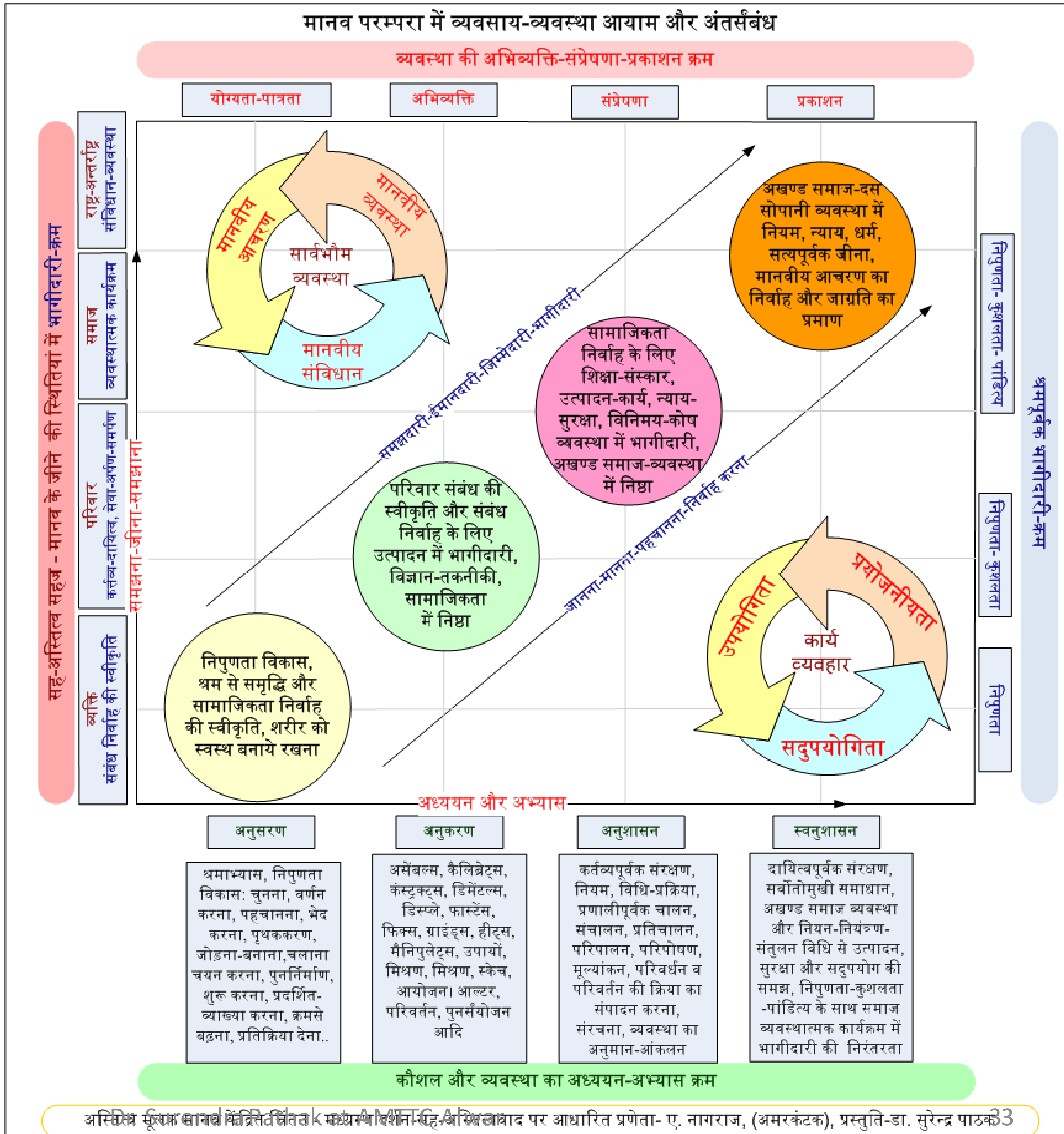

अधिगम (समझना-सीखना-करना), अधिगम की विशेषताएं और अधिगम क्षेत्र

अधिगम	समझना-समझाना	सीखना-सीखाना	करना-कराना
मानव के जीने के आयाम	अनुभव-विचार	व्यवहार	कार्य-व्यवसाय
कार्यविधि	कृत-कारित-अनुमोदित	कृत-कारित-अनुमोदित	कृत-कारित-अनुमोदित
कर्म	मानसिक-वाचिक	मानसिक-वाचिक	मानसिक-वाचिक-कायिक
शिक्षण आयाम	दृष्टि, दृष्टिकोण	शिष्टाचार, सामाजिकता	कौशल, विधि-विधान
शिक्षा आयाम	अनुभव-अध्ययन	अध्ययन-शिक्षण	अध्ययन-शिक्षण-प्रशिक्षण
अभ्यास (समझ-जीना)	विचाराभ्यास	विचाराभ्यास-व्यवहाराभ्यास	विचार-व्यवहार-कर्माभ्यास
समझदारी का क्षेत्र	ज्ञान	ज्ञान-विवेक	ज्ञान-विवेक-विज्ञान
समझने-जीने की विधि	तुलन-विश्लेषण-चित्रण-चिंतन	मूल्य-चरित्र-नैतिकता	निपुणता-कुशलता-पांडित्य
जीने की प्रक्रिया	सत्य-धर्म प्रक्रिया	न्याय-प्रक्रिया	नियम-प्रक्रिया
अनुगमन क्रियाएं	महाकारण-कारण-सूक्ष्म	कारण-सूक्ष्म-स्थूल	सूक्ष्म-स्थूल
विषय क्षेत्र-दर्शन-शास्त्र	दर्शन-मीमांसा-मनोविज्ञान	व्यवहार दर्शन-सामाजिक विज्ञान	कर्मदर्शन-विज्ञान-अभियांत्रिक/तकनीकी
विषय क्षेत्र-वाद	अध्यात्मवाद	जनवाद	भौतिकवाद
विषय क्षेत्र-इतिहास	ज्ञान परम्परा	व्यवहार परम्परा	विज्ञान-व्यवस्था परम्परा
भाषा	कारण	कारण-गुण	कारण-गुण-गणित
व्यवस्था क्षेत्र	स्वयं/जीवन/व्यक्ति	सामाजिक	आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक
मानव के जीने की स्थितियां	व्यक्ति	परिवार-समाज	राष्ट्र–अन्तर्राष्ट्र
व्यवस्था क्रम	मानव मानसिकता	अखण्ड समाज	सार्वभौम व्यवस्था
चतुर्दिक उदय	विधि-संस्कृति	विधि-संस्कृति-सभ्यता	विधि-संस्कृति-सभ्यता-व्यवस्था
कार्यक्रम	सदुपयोगात्मक कार्यक्रम	सुरक्षात्मक कार्यक्रम	आर्थिक कार्यक्रम
संचार	अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन	अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन	अभिव्यक्ति-संप्रेषणा-प्रकाशन
वातावरण	आंतरिक वातावरण	मानवकृत वातावरण	प्राकृतिक-वातावरण
क्रिया	बौद्धिक क्रिया	सामाजिक क्रिया	भौतिक-रासायनिक क्रिया
स्थानान्तरण	बौद्धिक परिमार्जन	व्यावहारिक-परिमार्जन	भौतिक-रासायनिक परिवर्तन
सर्वांगीण विकास	प्रतिभा	प्रतिभा-व्यक्तित्व	स्वायत्तता
लक्ष्य-प्रयोजन	समाधान-जाग्रति	समाधान-समृद्धि-सामाजिक विकास	अभय-सहअस्तित्व-विकास-प्रगति

अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन - मध्यस्थ दर्शन-सह-अस्तित्ववाद पर आधारित प्रणेता- ए. नागराज, अमरकंटक, (परिभाषाएं परिभाषा संहिता से) प्रस्तुति डा. सुरेन्द्र पाठक

अधिगम क्षेत्र -1

संपूर्ण शिक्षा वस्तु के विभिन्न मुद्दों, क्षेत्रों और आयामों को **समझना, सीखना, करना** (अधिगम) के आधार पर वर्गीकृत है। मानव में कर्म **मानसिक, वाचिक, कायिक** होते हैं और इन्हें करने की विधि **कृत (करना), कारित (कराना), अनुमोदन (सहमत)** होना, इस प्रकार नौ प्रकार से कर्म होते हैं।